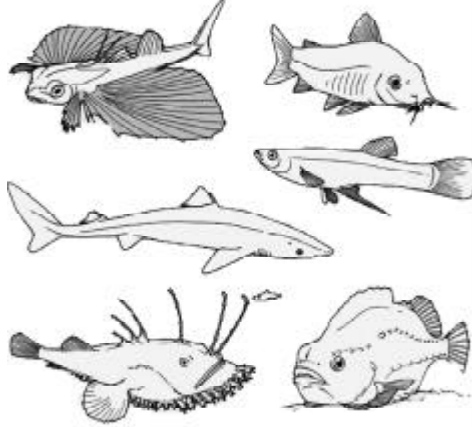


समुद्री मछलियां नदियों में पैदा हुई थीं

आज समुद्र में पाई जाने वाली मछलियों में से तीन-चौथाई की उत्पत्ति शायद नदियों और झीलों में हुई है। यह निष्कर्ष न्यूयॉर्क के स्टोनीब्रुक विश्वविद्यालय के ग्रेटा वेगा और जॉन विएन्स ने जीवाश्मों के व्यापक अध्ययन के आधार पर हाल ही में प्रस्तुत किया है। इस आधार पर उनका मत है कि यदि नदियां और झीलें प्रदूषित हुईं तो समुद्री जैव विविधता पर भी खतरा मंडराने लगेगा।

वेगा और विएन्स ने रे-फिन्ड मछलियों के जैव विकास के वंश वृक्ष का अध्ययन किया। यह समूह मछलियों का सबसे बड़ा समूह है और लगभग 96 प्रतिशत समुद्री व मीठे पानी की मछलियां इसी समूह में आती हैं। रे-फिन्ड मछलियों की विशेषता यह है कि इनका कंकाल वास्तविक हड्डियों से बना होता है और इनके पंख हड्डियों पर त्वचा के आवरण से निर्मित होते हैं।

रे-फिन्ड फिश लगभग 30 करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व में आई थीं। वेगा और विएन्स ने पाया कि उस काल के अधिकांश जीवाश्म मीठे पानी में जमी तलछटों में मिलते हैं। जीवाश्मों के अध्ययन के आधार पर वेगा और विएन्स का मानना है कि रे-फिन्ड मछलियां शायद आज से करीब 17



करोड़ वर्ष पूर्व तक समुद्र में पहुंची होंगी। आज समुद्री मछलियों में करीब 75 प्रतिशत इन्हीं की वंशज हैं।

जैव विकास में ऐसा उलटफेर कोई असामान्य बात नहीं है। उदाहरण के लिए, अधिकांश व्हेल्स, डॉल्फिन्स और पोर्पाइज़ आज ज़रूर समुद्र में रहते हैं मगर उनकी उत्पत्ति नदियों के मीठे पानी में हुई थी।

व्हेल, डॉल्फिन्स के बारे में पहले से ज्ञात इस तथ्य और अब वेगा व विएन्स द्वारा प्रतिपादित निष्कर्ष को मिलाकर देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि समुद्री जैव विविधता काफी हद तक नदियों और झीलों की सेहत पर निर्भर है। यदि हमारी झीलों और नदियों में प्रदूषण के कारण जैव विविधता खतरे में है, तो समुद्र की जैव विविधता भी खतरे से बाहर नहीं है। इसका एक कारण यह है कि समुद्रों में

परिस्थितियां कई मर्तबा जीवन के प्रतिकूल हुई हैं और हर बारी मीठे पानी की जलराशियों ने ही उन्हें पुनः समृद्ध किया है। समुद्र में अम्लीयता बढ़ने के आसार फिर से बन रहे हैं। मगर पता नहीं इस बार नदियां समुद्री जैव विविधता की क्षतिपूर्ति करने की स्थिति में होंगी या नहीं। (स्रोत फीचर्स)